Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 15-05-2023, Accepted: 30-05-2023, Published: 15-06-2023
Volume 4, Issue 1, 2023, Page No. 23-25

साहित्य सर्जक की अनुभूतियों पर उसके व्यक्तित्व और परिस्थितियों का प्रभाव

डॉ अजय कुमार श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं डीन विभाग, राजकीय शिक्षा कॉलेज, चंडीगढ़, हरियाणा, भारत

सारांश
साहित्य का निर्माण सर्जक की साधना है, सर्जक या रचनाकार जब अपनी अनुभूतियों की बलवती चेतना से प्रभावित और विवश होता है तो यह अनुभूति सर्जना के रूप में सामने आकर उसकी संवेदना को आकर देती है. और यह आकर निर्माण के विभिन्न रूपों में समाज के सामने आता है. वस्तुतः अनुभूति सर्जक की होती है परन्तु जब वह कोई रूप लेकर समाज के सामने आती है तो वह समाज की हो जाती है. इस सृजन पर सर्जक का दावा पूर्ण रूपेण नहीं रह पाता. उसका एकाधिकार समाप्त हो जाता है. सृजन में उसकी सोच उसकी कृति को उसके अनुसार रचने या गढ़ने का काम करती है. उस सृजन का उचित निर्धारण उस समय के समाज के साथ आनेवाला युग भी करता है और उसकी कालजयिता और प्रासंगिकता का निर्धारण भी करता है. इस कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही उस सृजन का सही मूल्य निश्चित हो पाता है जिसमे अहम् भूमिका युग के मनीषियों की होती है.

मूल शब्दः सर्जक, अनुभूति, कवि सृजन, मनीषी, कसौटी

कवि अथवा कलाकार का व्यक्तित्व निःसंदेह आनुवंशिकता और वातावरण के संयुग्मन से बनता है। किसी भी कलाकार की सोच पर उसके रहन–सहन तथा उसके क्रिया कलाप में उसके वातावरण की स्थिति का बहुत बड़ा योगदान है। इसीलिए कलाकार तथाउसके पारिस्थिति तंत्र के परस्पर संबंधों की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योकिं कला स्वयं ही सामाजिक घटना है और मनीषी (कलाकार) एक सामाजिक प्राणी है। सम्भतः इसके अधोलिखित कारण हो सकते हैं––––––

1. कलाकार की मूलानुभूति कितनी ही व्यक्तिगत और निराली क्यों न हो पर फिर भी कलाकार एक सामाजिक प्राणी हैं।
2. प्रत्येक कलाकृति चाहे उस पर कर्ता की मूल अनुभूति की कितनी गहरी छाप क्यों न हो और उसका मूर्तरूप कितना ही निराला व अद्वितीय क्यों न हो कलाकार तथा समाज के अन्य सदस्यों के बीच एक प्रकार संपर्क सेतु हैं।
3. कलकार की रचना से अन्य व्यक्ति प्रभावित होते हैं और उन्हें अपने विचारोंए उद्देश्यों अथवा मूल्यों पर पुनर्विचार (अनुमोदन या अवमूल्यन) करने में सहायता मिलती हैं। इस प्रकार प्रत्येक सफल कलाकृति में एक प्रकार की सामाजिक शक्ति निहित होती हैं जिसके द्वारा जनमानस को आंदोलित या संप्रेरित करती हैं।

इस प्रकार कलाकार और उसकी परिस्थिति का अनिवार्य सम्बन्ध होता हैं। कोई कला समाज के प्रभाव से मुक्त नहीं रह सकती। कला का इतिहास प्रायः उतना ही पुराना हैं जितना मनुष्य का अर्थात समाज का।

किन्तु साहित्यकार साहित्य और समाज का यह अनिवार्य सम्बन्ध ऋजु–सरल न होकर अनिश्चित और जटिल होता है। साहित्य के समाज शात्रीय व्याख्ताओ ने इस अनिश्च के मूलतः दो कारण प्रस्तुत किये है। पहला कारण ऐतिहासिक है और वह यह की कलाकार तथा समाज का एक दूसरे के प्रति दृष्टिकोण बदलता रहता है। जिस तरह वह समाजए जिसमें रह कर कलाकार कला सृष्टि करता है, अपने मूल्यों, आदर्शों एवं परम्पराओ केसाथ बदलता रहता है उसी प्रकार भौतिक अस्तित्व से संपन्न एवं जिवंत मनुष्य होने के नाते कलाकार भी बदलता रहता है अतः साहित्य और समाज के परस्पर सम्बन्ध इतिहास के साथ ही बदलते रहते हैं साथ ही इन सब में जो अनवार्य तत्व है वह व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण करने वाली परिस्थिति ही होती है। दूसरा कारण तात्विक हैः वह कला की मूल प्रवित्ति में निहित है जो स्वयं अनिश्चित है। प्रत्येक महान कला कृति अपनी आरंभिक स्थिति में विशेष किन्तु परिणति की अवस्था में सार्वभौम होती है। महांकाल मानव जीवन की सार्वभौम सत्ता की प्रतिष्ठा करती है किन्तु इस सर्व भौम रूप की सिद्धि विशेष के द्वारा ही होती है क्योंकि कला का सृष्टा कलाकार या विशेष युग एवं समा ज एक विशेष संस्कृति और वर्ग के साथ सम्बद्ध होता है। कला का प्राण तत्व है सामजस्यए किन्तु इस सामंजस्य के मूल में विश्वास और सार्वभौम का द्वंद्व निहित रहता है जिसके कारण कला की मूल प्रकृति अनिश्चित एवं परिवर्तन शील बन जाती है। कला और समाज के बदले हुए स्वरुप और कला का द्वंद्व मूलक अनिश्चित प्रकृति के कारणए कला या साहित्य तथा समाज और व्यक्ति के परस्पर सम्बन्ध अनेक रूप होकर भी कही न कही अपने उत्स से जुड़े रहते। एक ही पृष्ठि में रहने और सृजन करने पर भी कुछ–कुछ अंतर आ ही जाता है और यह अंतर आ जाना स्वाभाविक ही है। परन्तु इन सब के बावजूद कला की द्वंद्व मूलक परिस्थिति साहित्य और समाज के संबंधों को कवि व्यक्तित्व से जोड़ देती है। कलकार की ओर से ये सम्बन्ध कभी संगती और सहमति के हो सकते हैंए कभी परिहार या पलायन और कभी विरोध या विद्रोह के रूप में व्यक्त हो सकते हैं। पर न्यूनाधिक मात्रा में कलाकार की स्वतंत्र का संरक्षण या परिसीमन कर सकती है १। इसके अलांवा एक तीसरा सम्बन्ध भी ही कवि के व्यक्तित्व के निर्धारण में प्रमुख योगदान करता है। जो अव्यक्त नहीं रहता है। इसके आधार पर एक अन्य सिद्धांत सामने आया है जो साहित्य की स्वायत्त अर्थात समाज निरपेक्ष सत्ता की प्रतिष्ठा करता है।

विषय विवेचन

साहित्य मानवीय मस्तिष्क के सबसे तेज अंश की वाणीए मानवीय क्षमता का सबसे अधिक निखरा हुआ सौंदर्यमय प्रतिफलन है और साहित्यकार भी समाज का एक जाग्रत प्रबुद्ध सदस्य है। वह द्रष्टा भी हो सकता हैए अतीतए वर्तमान तथा भविष्य तीनो इकाइयों के सूत्र अपने हाथ में सम्हालनेवाला तथा युग जीवन की धधकती हुई आग की लपटों के बीच भी बिना आंच लगे प्रशस्त तथा उच्च भूमियो की ओर ले जानेवालाए यदि उसकी सर्जन क्षमताएं उसकी दृष्टिए उसका मानसए वह ऊर्जा वह बोध और वह संवेदना पा सके जिसने भारत ही नही, विश्व भर मेंए

शताब्दियों से अनेक द्रष्टा कलाकारों को जन्म दिया हैए नयी अर्थ कला दी है, इस धरती को मनुष्य के लिए सही अर्थो में जीने योग्य और हमें अपनी सारी मानवीयता के साथ उससे सम्बन्ध हो सकने की विशिष्टता दी है।

इस दायित्व की भूमि से रची गयी कला को ही नयी पीढ़ियां पिछली पीढ़ियों से मूल्यवान विरासत के रूप में पाती रहीं हैं। उसे और भी सम्पन्न तथा समृद्ध कर आगे को नयी पीढ़ी को देती रही है और अपने समग्रता में यह मूल्य पूंजी ही आज हमारी सबसे बड़ी विरासत बन गयी है। दायित्त्व है हमारे ऊपर भी उस सपन्नता तथा सम्वृध्धि को नयी भूमिकाओं से युक्त करने काए अपनी ओर से भी नयाए मौलिकए खास अपना जोड़ने काए उसे उस रूप में ढलने का जिस रूप में वह अक्षत जीने योग्य बन पातप है। दायित्त्व तो हम सब पर इतना है। परन्तु स्थितियां हमारे लिए उतनी सहज नहीं है। परिवेश की भयावहता जितनी आज है उतनी पहले नहीं थी प मूल्यों का संकटए मयार्दाओं का विघटनए विवेक का ह्रास जितना प्रत्यक्ष आज हैए उतना तब न था। समय–समय पर लेखकों को मिलने वाले प्रोत्साहन या हतोत्साहन जिस परिवेश का सृजन करते हैं उसका प्रभाव लेखक पर पड़ना स्वाभाविक ही हैं। ऐसे प्रोत्साहन की पृष्ठ भूमि कृ तिकार के सृजन को प्रभावित करती हैं। इस प्रोत्साहन का स्वरुप क्या हैं? इस समबध में तथ्य संकलन कृति और कृतिकार को समझने में सहायक हो सकते हैं २।

आज तो हमारी विरासत उसकी सम्पन्नता की ओर किये गए हमारे सारे प्रयासए कला साहित्य तथा संस्कृति की सारी ईमारत भयानक भूचालों के क्रम में हिल सी रही हैए अब तक की सारी उपलब्धियां दांव पर लगी हुई हैं। युद्ध खोर आसुरी शक्तियां युद्ध की आवाज लगा रहीं हैं बस एक युद्ध और–उसके बाद सब कुछ ख़त्मए सब कुछ समाप्त–यत्र तत्र बचे अस्वथ विकलांग मनुष्य कहे जाने वाले प्राणी का भयानक आर्त नाद, उसकी वैसी ही अस्वथ, विकलांग संतति की शताब्दियाँ आज तक की परम्परा––वाल्मीकिए कालिदासए शेक्सपियर भाव आत्मा के शिल्पी न जाने कितने अन्य कलाकारों द्वारा निमिर्त कलाए साहित्य तथा संस्कृति की सड़ती हुई लाश पर बैठीए सर धुनतीए विकलांग रूपए कुरूप मनुष्य की नस्ल–जैसे इन कला कारों का सारा प्राप्तव्य यही हो।

हमें इसी चुनौती के बीच से आज गुजरना पड़ा है और हम गुजर भी रहे हैं। परिवेश की भयावहता आज के मनुष्य के ऊपर हावी होने की कोशिश कर रही हैए मनुष्य है की अपनी आस्था को लिए हुए उस भयावहता को अतिक्रांत कर आगे की ओर निकल जाना चाहता है।

साहित्य कार तथा कलाकार भी आज दर्शक न होकर इस परिस्थिति के भोक्ता–साहस शील भोक्ता हैं। जाहिर है की परिवेश की भयावहता तथा उसी के बीच जगमगाती हुई मनुष्य की प्रगतिशील चेतना का यह द्वंद्व मनुष्य के पक्ष में तभी समाप्त होगा जब मनुष्य और उसी का अंग साहित्यकार अपने को दीप्त रखे। साहित्य उस मनुष्य की वाणी बने जो बराबर संग्राम में जूझ रहा हैए लड़ रहा है वह उसके उस सौंदर्य बोध को अपनी कला में रूपायित करेए जिसके लिए ही महान कलाकारों की विरासत को युद्धकी आंच से बचाने के लिए वह अपने प्राण को भी दांव पर लगाए हुए है। साहित्य तथा साहित्यकार ऐसा तभी बन सकता है और साहित्यकार अपने महान पूर्ववर्तियों की परम्परा का तभी समर्थ उत्तराधिकारी कहला सकता है जब समस्त प्रकार के विघटन के बीच साहस के साथ इस लड़तेहुए मनुष्यए उसके द्वारा रचे जानेवाले इतिहास का पक्षधर बन कर सामने आयेए उस मनुष्यता की हिमायत करे जो आज दलित हैं। त्रस्त हैंए और इस त्रास से छुटकारा पाने के लिए उबल रहे है उस मनुष्य को कंधे का सहारा दें जो संघर्ष में विजयी बन कर प्रकट तो हुआ परन्तु निरंतर संघर्ष ने जिसकी शक्ति के अधिकांश को चूस लिया हो और इस बची हुई शक्ति के बल पर वह अपना और अपनी मिटटी का नया संस्कार करने के लिए पुनः एक नए अभियान की तैयारी कर रहा है। उस मनुष्यता का स्वागत करें जो अत्याचारियों की छाती पर नयी आकृति पर ढल रही है। उस इतिहास का निर्माण कर रही है जो अभी भी हमारा प्राप्य है।

कृतिकार का जीवन समस्या ग्रस्त है या नहीं? यदि है तो उसके जीवन की समस्याएं क्या हैं? वे उसके लक्ष्य में किस प्रकार बाधक बन उसके व्यक्तित्व और सृजन को प्रभावित करती हैं? समस्याजनित परिवेश लेखक के मन में क्या निराशाएं उत्पन्न करता है? ये निराशाएं क्या हैं? लेखक के जीवन में निराशा के क्षण कब आते हैं? उन निराशाओ से उसके सृजन का सम्बद्ध किस प्रकार जुड़ता है और उसके ह्रदय में समाज के प्रति किस प्रकार की भावनाएं विकास पाती हैं? क्या लेखक के ह्रदय में आक्रोश इन समस्याओ एवं निराशाओ के कारण है? निराश जनित परिवेश उसके सृजन को किस प्रकार प्रभवित करता है और किस प्रकार व्यक्तित्व प्रदान करता है? खोज की अपेक्षा रखता है ३। ये प्रश्न किसी भी कवि के व्यक्तित्व का निर्धारण करने वाली परिस्थियों के प्रति संकेत है। किसी भी साहित्यकार और सर्जक का व्यक्तित्व उसके परस्थितियों से अलग नहीं हो सकता। अतः निःसंदेह सर्जक का निर्माण ये परिस्थियाँ ही करती हैं और इन परिस्थियों का पूरा प्रभाव उसके सृजन पर भी पड़ता हैं। इसीलिए कोई भी कृति साहित्यकार अथवा सर्जक के व्यक्तित्व का आरम्भ तो होती ही हैं साथ ही साथ परिस्थितियों का भी स्पष्ट रेखांकन कर जाती हैं। परिस्थितियों तथा लोकचेतना के दबाव वश एक हद तक उससे भयभीत होकर साफ बात भी न करनाए ऊपर से अपनी अनुभूतिमयता का दम्भ करना परन्तु अपने यथार्थ बोधए अपने मानवतावाद आदि को नजरंदाज कर भीतर ही भीतर से समस्या को उलझाना और प्रश्न से मुँह चुराना और किसी को शोभा दे दे तो कम से कम उस रचनाकार को तो तनिक भी नहीं देता जो अपने आधुनिक बोध को आये दिन रंग–विरंगी पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापित किया करता हैं।

कुछ ही दसक पहले प्रगतिवाद में 'सामान्य मानवता के गीत गाने की बात उठाई गयी थी। तर्क दिया था की दुःखए अपूर्णताए पीड़ा–––सर्व व्यापी हैं। गरीबो ने इनका ठेका नहीं लिया है। अतएव क्यों न वर्गों के ऊपर उठकर सामान्य मानवता के गीत गाये जाँय? इस बात को उठे बहुत समय बीत गयाए परन्तु सामान्य मानवतावाला यह नुस्खा अनेक रचनाकारों के बीच आज भी अत्यंत लोकप्रिय है और प्रकारान्तर से वर्गों से परे सामान्य मानवता की बात भी लगभग उसीरूप में की जा रही है। गरीबो केबाद केवल अमीर बचते हैं। बीच की किसी भी स्थिति की सही रूपरेखा अब तक सामने नहीं आयी। अमीर गरीब की जोड़ी विश्व विख्यात है और साथ ही साथ यह भी दोनों जानी दुश्मन हैं। पर इन खाइयों को पैदा करने का बहुत कुछ कारण कवि या सर्जक की मनः स्थिति भी हैए उसकी परिस्थियाँ भी हैं। मध्यवर्ग इन्ही दोनों खाइयों को कम करने के तहत मनोवृति कोसहज करने का एक प्रयास है। यद्यपि इसको भी निम्न मध्य वर्ग तथा उच्च मध्य वर्ग में बाँट कर अमीरी और गरीबी की पंगत में बैठने का निर्धारण भी हमारी अपनी परिस्थियों की ही सोच है। यह सामान्य मानवता शब्द अपने में कितनी गहरी व्यंजनाओंए कितने बड़े अर्थों से युक्त है, कदाचित इस भूमिका पर उसे आसानी से समझा जा सकता है। संवेदना के वितरण के सिलसिले में ऐसा कोई रचनाकार यदि अमीरों के दुःख दर्द को ही उसका अधिक अंश दे दे तो भी कोई आश्चर्य नहीं। सामान्य मानवता प्रेमियों के यहाँ ऐसा हुआ भी है––– वे कह सकते हैं की कोई तराजू लेकर वह संवेदना बाटने नहीं बैठे हैं। ऐसे रचनाकारों के कृतित्व में अकसर गरीबों के ज्वलंत दुःख दर्द पीछे छूट गए हैं और अमीरों की परेशानियां प्रमुख हो उठी हैं। अतएव सामान्य मानवता से प्रतिबद्ध

होनेवाली यह बात कितनी प्रशस्त है यह भी परिस्थितियों के मूल्याङ्कन का ही विषय है। सवाल यह उठता है कि कवि के व्यक्तित्व का अहम् तत्व जो उसकी संवेदना है वह उसकी कृति में तटस्थ रूप में कहाँ तक समाहित हो सका है तथा उसमें कितनो को प्रभावित करने कि असीम क्षमता है। जब कृतिकार अपनी संवेदना का बटवारा गरीब–अमीर में करने लगता है तो निःसंदेह वह पक्षधर हो जाता है और तभी उसकी रचना किसी एक वर्ग तक ही सिमट कर रह जाती है। जबकि कुछ संवेदनाएं ऐसी हैं जिनका प्रभाव ह्रदय पर पड़े बिना नहीं रह जाता है वह गरीबी अमीरी से ऊपर उठकर प्रत्येक प्राणी पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है। संभवतः इसीलिए निराला कि 'सरोज स्मृति' की करुणा का सभी पर अमित प्रभाव अवश्य होता है।

इसीलिए यहाँ सवाल उठता है कि तटस्थता या प्रतिबद्धता यदि मानवता के प्रति है तो कौन सी मानवता के प्रति? मनुष्यता का अधिकांश आज भी सुविधा विहीन है, जीवन यापन की सहज सुविधाओं तक से विहीन है। किसानए मजदूर या अन्य निचले स्तर पर जीवन यापन करने वालों का सत्य यही है। साहित्य या कला की बात तो दूर की बात है। प्रतिबद्धता का यदि मानवता के सन्दर्भ में कोई अर्थ हो सकता है तो इसी मानवता के सन्दर्भ मेंए मानवता के प्रति इसी प्रकार की दृष्टि रखनेवाली विचारधारा के सन्दर्भ में। सामान्य मानवता की बात करके और फिर कुछ भी लिख पढ़ के आज के फनकार अपने दायित्व से छुट्टी नहीं पा सकता। मानवता को उसके सही स्वरुप में देखनाए दिखाना ही आज के रचनाकार का प्रमुख दायित्व है। उसकी संवेदनाएं सबके लिए नहींए युगए समाज तथा मनुष्य की सही तथा सच्ची आकृतियों के लिए है। यह तभी होगा जब साहित्यकार परिस्थियों में घुसे तो पर परिस्थियों से निष्प्रभावित हो कर उसका सम्यक मूल्याङ्कन करेगा।

निष्कर्ष

तथ्य इस ओर संकेत करते हैं कि–––सामाजिकए सांस्कृतिक या आर्थिक परिवेश के सन्दर्भ में ही लेखक और उसकी सृजन प्रक्रिया का अध्ययन करना पर्याप्त नहीं है बल्कि उसकी अनुभूति और उसकी सृजन प्रक्रिया कि परिधि कि माप हेतु उस परिवेश का अध्ययन करना भी आवश्यक है जिनका सृजन लेखक कि अन्तः क्रियाओ के सन्दर्भ में होता है। अपनी उर्जित स्थिति के प्रति लेखक का संतोष या असंतोष स्थिजन्य भूमिका के प्रभाव और उससे उतपन्न परिवेश लेखक कि मानसिकता को प्रभावित करते हैं। परिस्थिति और भूमिका का संतुलन या असंतुलन उसके सृजन को प्रभावित करता है जिससे उसकी अभिव्यक्ति अछूती नहीं रहती।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अडोल्फी संकेज वाल्केजः आर्ट एंड सोसाइटीए पृष्ठ ११४
2. डॉ वी डी गुप्ताः साहित्य सृजन और अन्तः क्रियाए पृष्ठ ४७
3. वही, पृष्ठ ४७